[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3270

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

समाजिक समस्याऐं व पर्यावरण

रामवीर सिंह
पी.एच.डी. शोधार्थी (इतिहास) राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मन्दसौर, म.प्र.

प्रस्तावना

सामाजिक पर्यावरण (Bio Social Environment) में परिवर्तित हो रहा है फलस्वरूप पर्यावरण संघटों के मौलिक गुणों में परिर्वतन हो रहा है। स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरणीय परीक्षण आवश्यक है, विकास के संचालन के लिए नत्य व अनत्य संसाधनों को उपयोग दुर्लभ एवं अमूल्य संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता ने पर्यावरण प्रबन्धन को अव्यन्त महत्वपूर्ण बना दिया है। [1]

पर्यावरण के प्रति सचेत संवदेनशील तथा जागरूक बनाया जाना भी बेहद जरूरी है, लोगो को यह समझाया जाना आवश्यक है कि आखिर हमारा पर्यावरण या परिस्थितिक तंत्र कैसे प्राकृतिक आपदाओं से हमारी सुरक्षा सुनिश्चित करता है तथा पर्यावरण का संरक्षण व सवर्द्धन तथा उसको वैश्विक स्तर पर मानवीय हस्तक्षेप के कारण जिस प्रकार पर्यावरण संतुलन तथा पारिस्थितिक को लगातार क्षति पहुचायी गयी है, उससे न सिर्फ मौसम, जलवायु तथा अन्य प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियों में अप्रत्यशित परिवर्तन देखने को मिले बल्कि प्राकृतिक आपदाओं की दर तथा पर्यावरण को हुई क्षति के लिए परस्पर एक–दूसरे पर दोषारोपण करने के वजाय विश्व के सभी देशों को आपस में परस्पर समन्वय सम्बन्ध स्थापित करके इसकी भरपाई के लिए प्रयास करने चाहिए। हमार लिए विकास जरूरी है मगर पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्द्धन उससे कही अधिक जरूरी है। [2]

सामाजिक समस्या एवं पर्यावरण

मानव इतिहास के प्रारम्भ से ही अपने चारों ओर पर्यावरण मं रूचि रखता आया है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व हेतु अपने पर्यावरण का समुचित ज्ञान आवश्यक होता था। मनुष्य ने अग्नि तथा अन्य यंत्रों का प्रयोग पर्यावरण को परिवर्तित करने के लिए सीखा है और विधि द्वारा मानव पर्यावरणीय ज्ञान में वृद्धि करता रहा है। धीरे–धीरे पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञान इतना विस्तृत एवं वृद्ध हो गया है कि इसे एक विज्ञान का रूप दिये जाने की स्थिति आ गयी है और पर्यावरण अध्ययन से पर्यावरण विज्ञान का जन्म हुआ।

अन्य जीवों की भॉति मानव भी पर्यावरण का एक अंग है परन्तु अन्य जावों की तुलना में मानव में अपने चारो ओर के पर्यावरण को प्रभावित तथा कुछ अर्थो में नियन्त्रित कर पाने की पर्याप्त क्षमता है, इसी कारण पर्यावरण सम्बन्धों को अधिक महत्व दिया जाता है। विगत सौ वर्षो में मानव ने आर्थिक भौतिक तथा सामाजिक जीवन के प्रत्येक पक्ष में प्रगति की है। उसकी इन क्षेत्रों में प्रगति एक उद्देश्य या इससे उसका स्वंय का हित हो उसने इस प्रगति के पर्यावरण पर पडने वाले प्रभावों की ओर ध्यान दिया , मानव पर्यावरण पृथ्वी के प्राकृतिक स्त्रोतों तथा मानव द्वारा सांस्कृतिक रूपान्तरण से अभिप्राय प्राकृतिक स्त्रोतों में मानव उपयोग हेतु दिये गये प्रकरणों परिवर्तन य सम्बन्धों से है। [3]

पर्यावरण की प्रकृति गतिशील है। भौतिक तथा जैविक पर्यावरण के तत्वों में परिवर्तन होता रहता है। स्थला कृतियों के समस्त परिवर्तन सूर्य की ऊर्जा के कारण होते है। सूर्य , पृथ्वी और उसके वायुमण्डल को समान रूप से गर्म नही करता है जिसकी वजह से वायु और जल का परिसंचरण होता है। परिणाम स्वरूप विभिन्न ऋतुओं की जलवायु की दशाओं में परिवर्तन हो जाता है। भौतिक पर्यावरण में बहुत परिवर्तन भी हुए जिसकी वजह से पेड–पौधे और जीव जन्तुओं की कुछ जातियाँ विलुप्त हो गयी तथा नये भौतिक पर्यावरण के अनुरूप

पेड–पौधों और जीव – जन्तुओं की नई जातिओं का विकास हुआ। आज से करीब साढे छः करोड वर्ष पूर्व पेड–पौधों और जीव–जन्तुओं की अनेक जातियाँ बहुत बडी संख्या में विलुप्त हो गयी, मनुष्य का विकास लगभग 10 लाख पूर्व पर्यावरण में आये परिवर्तन के कारण भी हुआ था।

पर्यावरण के कारण

जिस पर्यावरण में जीव रहते है वह पर्यावरण के पास्परिक सम्बन्धों का एक जटिल समीकरण है, चूँकि पर्यावरण का प्रभाव जीवधारियों पर पड़ता है, इसलिए इसका अध्ययन करना अति आवश्यक है। पर्यावरण का प्रत्येक भाग प्रत्यक्ष रूप से जीवन को प्रभावित करता है।

पर्यावरण अवनयन

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ होता है मनुष्य के क्रिया कलापों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र सन्तुलन में अव्यवस्था एवं असंतुलन उत्पन्न हो जाना जब पर्यावरण अवनयन नाजुक सीमा से अधिक हो जाता है कि वह विभिन्न जीवों के रूपों से तथा मानव के लिए मुख्य रूप से घातक एवं जानलेवा सिद्ध हो जाता है तो उसे पर्यावरण प्रदुषण कहते है। पर्यावरण प्रदूषण स्थानीय या प्रादेशिक स्तर तक सीमीत रहता है, जबकि पर्यावरण अवनयन विश्व स्तरीय होता है।

पर्यावरण के प्रति पारिवारिक तथा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व

- वृक्षों–झाड़ियों, वनस्पतियों की कटाई को रोक कर उनकी रक्षा की जाये।
- ईधन के रूप में लकड़ी की जगह वॉयो गैस और सौर कुकर आदि को प्रयोग किया जाये।
- जन साधारण को वृक्षों के महत्व समझाकर उन्हे वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित किया जाये।
- खाद सामग्री में मिलावट पाये जाने पर उसके विरूद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाये।
- गोबर हरी खाद्य एवं केंचुआ खाद्य का प्रयोग किया जाये।
- गरीबों को आवश्यक वस्तुओं का वितरण किया जाये।
- पैट्रोल का आवश्यक कार्यो पर ही वाहन का प्रयोग किया जाये।
- (T.V, Radio, Tap etc.) की आवाज धीमी रखी जाये।
- विद्युत उपयोग पर नियंत्रण रखा जाये।
- कार्बनिक कचरे से घरेलू स्तर पर बर्मी क्रम्पोस्ट बनायी जाये।
- प्लास्टिक की थैलियों में सामान न लाकर कागज या कपड़ो के थैलों का प्रयोग किया जाये।

पर्यावरण की संरचना

पर्यावरण के जैव तथा अजैव संघटक मिलकर परस्पर द्वारा जैव मण्डल की संरचना करते है। पृथ्वी की समस्त भाग जिसमें जीव विध्यमान है तथा जीवीयं एवं अजीवीय घटक संयुक्त रूप से जीव मण्डल का निर्माण करते है। जैव मण्डल को चार भागों में बाँटा गया है।

(1) जल मण्डल (2) स्थल मण्डल (3) वायु मण्डल (4) जैव मण्डल

जल मण्डल :– पृथ्वी पर उपस्थित सभी जलाशय स्वच्छ जलीय तथा समुद्र आदि संयुक्त रूप से जल मण्डल का निर्माण करते है।

स्थल मण्डल :– स्थल मण्डल पृथ्वी की ठोस पर्त का बना हुआ है, इसके अन्तर्गत चट्टानें, मृदा, खनिज आते है। खनिज जैव तंत्र के लिए बहुत ही घातक है।

वायु मण्डल :– जल मण्डल तथा स्थल मण्डल गैसों से ढके रहते है, इनमें भी जीव विध्यमान हाते है, इसे वायु मण्डल कहते है।

जैव मण्डल :– पृथ्वी पर उपस्थित संजीवों में मानव जन्तु वनस्पति तथा सूक्ष्मजीव सम्मिलित है। [4]

जीव मण्डल का निर्माण र्जव और अजैव घटको के सम्मिलित होने के कारण होता है। जिसमें प्रत्येक कारकों का एक विशिष्ट कारण होता है, जीव मण्डल के विभिन्न कारको का कुल योग जीव मण्डल को सबसे बडा जैव– तंत्र माना जाता है। जीव मण्डल के घटो में असंतुलन होने पर प्रभावित होता है। पर्यावरण को स्वस्थ रखने के लिए यह आवश्यक है कि जीव मण्डल के विभिन्न जैव और अजैव घटकों के बीच आपसी समन्वय और सन्तुलन होते है।

जीव मण्डल के आकरण का संघटन सामान्य रूप से 30 कि0मी0 से कम मीटी वायु, जल, स्थल, मिट्टी तथा शैल की पतली परत से होता है। जीव मण्डल की परत का निर्धारण ऑक्सीजन , तापमान तथा वायदाब की सुलभता तथा प्राण्यता के आधार पर किया जाता है। [5]

पर्यावरण का मानव जीवन पर प्रभाव

पर्यावरण पर मानव जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है कोई भी जीव अपने पर्यावरण के प्रभाव से अछूता नही रह सकता है। पर्यावरण के उपर्युक्त चारों क्षेत्रों में जैव मण्डल का मुख्य कारक मानव है, मानव पर्यावरण के इन चारों क्षेत्रों से प्रभावित होता है, यही नही मानव इन चारों क्षेत्रों को अपनी क्षमता के अनुसार इन्हे प्रभावित, नियन्त्रित एवं परिवर्तित भी करता है। भूगोल में पृथ्वी का समय अध्ययन मानव के निवास स्थान के रूप में किया जाता है। मानव द्वारा ही संस्कृति का निर्माण होता है। संस्कृति मनुष्य की कुशलता, क्षमता, नैतिकता और विचार धाराओं का सम्रग रूप होता है। मनुष्य पृथ्वी की उपज है, पृथ्वी ने उसका पौषक किया है तथा उसके विचारों को निश्चित दिशा में मोडा है, इस प्रकार कहा जा सकता है कि मनुष्य के कार्य एवं सामाजिक संगठन प्राकृतिक पर्यावरण से ही निर्धारित एवं क्रियावित्त होते है। [6]

सन्दर्भ

1. *पारिस्थितिक एवं पर्यावरण ओझा एस. के प्रधान कार्यालय – 1643 रामभवन नया गॉव,अल्लापुर इलाहाबाद। पृ0सं0 187*
2. *प्रतियोगिता दर्पण, तिवारी शंकर प्रसाद 2/11ए स्वदेशी बीमा नगर आगरा। पृ0सं0 130*
3. *प्रतियोगिता साहित्य, सम्पादक मण्डल , साहित्य भवन, सी–17 साइट सी, सिकन्दरा, आगरा। पृ0सं0– 223*
4. *तारगेट 100, गुप्ता डॉ0 अनिल कुमार आर.एम.डीटीपी यूनिट, कैलाश प्रिटंर्स आगरा। पृ0सं0– 2,3,4*
5. *लूसेन्ट (पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण), कुमार संजीव , न्यू बाइपास रोड अशोक चक्र, पटना, पृ0सं0 25,26*
6. *चित्रा, पवार डॉ0 आर.एस., प्रकाश डॉ0 वेद, चित्रा प्रकाशन इण्डिया प्रा0लि0 , 312 वेस्टर्न कचहरी रोड मेरठ। पृ0सं0–165*